Regarding maintaining the sanctity of Religious places

श्रीमती महिमा कुमारी मेवाड़ (राजसमन्द) : महोदय, आज मुझे पहली बार बोलने का मौका मिला है तो सबसे पहले मैं अपने राजसमन्द परिवार को बहुत-बहुत धन्यवाद देना चाहूँगी कि उन्होंने मुझे सिर्फ जिताया नहीं है, बल्कि राजस्थान की सबसे बड़ी जीत देकर यहाँ पर भेजा है। जैसे मैंने उनको बोला था कि मैं उनकी आवाज केन्द्र में बनूँगी तो मैं उनको आपके माध्यम से बोलना चाहती हूँ कि जो भी उनका काम होगा, मैं पूरी तरह मन लगाकर करूँगी।

मैं उस प्रदेश की हूँ, जिसको भक्ति, शक्ति और वीरता के प्रदेश के नाम से जाना जाता है। मैं उस देश की हूँ, जिसे मीराबाई, रानी पद्मिनी, रानी हाड़ी और पन्ना धाय से जाना, पहचाना जाता है। यह मेरा गर्व है, मैं उस वंश की बहू हूँ, जिसको पूरी दुनिया महाराणा प्रताप के नाम से जानती है। हमारे पुरखों ने कभी भी, चाहे जाति हो, चाहे वर्ग हो, चाहे धर्म हो, उसके हिसाब से नहीं बाँटा है। वे सबको एक साथ लेकर चले हैं और इस वीर भूमि के लिए सबने एक बराबर बलिदान दिया है। मैं पहली बार चुनकर आयी हूँ, लेकिन जिस दिन से मैं यहाँ आयी हूँ, मुझे यह सुनकर बहुत ही खराब लगता है कि बार-बार यह कहा जाता है कि जाति, वर्ग, धर्म के बारे में भेदभाव हो रहा है। हमारा इतिहास 1400 वर्ष पुराना है और 36 कौम ने मिलकर हर तरह की लड़ाई लड़ी है, 1400 वर्षों से यह लड़ाई लड़ी है। जितनी भी 36 कौम हैं, उनको एक माला की तरह पिरोकर हम लोग आगे लेकर गए हैं। आज जब यहाँ भेदभाव की बात होती है तो बहुत ही खराब लगता है।

महोदय, मेरी डिमांड यह है कि जैसे चाहे केन्द्र में हो, चाहे स्टेट में हो, हम यह देख रहे हैं कि हर जगह जो धार्मिक स्थल हैं, उनको हमें धार्मिक स्थल की तरह ही रखना चाहिए, वहाँ पर मनोरंजन के व्यवसाय नहीं करने चाहिए। जैसे मेरे क्षेत्र में नाथद्वारा है, श्रीनाथ जी हैं, उसका एक इतिहास है, उसका एक संस्कार है, उसका एक धर्म है, हमें उसे उसके लिए पूजना चाहिए। चाहे बनारस हो, चाहे अयोध्या हो, चाहे बद्रीनाथ हो, जिसके लिए हम वहाँ जाते हैं, हमें वहाँ उन्हें पूजना चाहिए। वहाँ हमें मनोरंजन नहीं करना चाहिए। वहाँ पर आप सुविधा उपलब्ध कराइए। नाथद्वारा में मंदिर तो है, साथ-साथ में वहाँ उन्होंने एक बहुत बड़ा अलग तरह का शिवजी का मंदिर, ऊँची मूर्ति बनाई है, जिसमें लिफ्ट से जाते हैं, चप्पल पहनकर जाते हैं, वह अलग तरह की चीज है। मेरा आपके माध्यम से केन्द्र सरकार और राज्य सरकार से यही अनुरोध है कि आप लोग धर्म स्थल को, जो जैसा है उसी तरह रखिए ताकि किसी की भी भावना को चोट न पहुँचे। आपने मुझे बोलने का मौका दिया, इसके लिए आपका बहुत-बहुत धन्यवाद।